समकालीन विश्व राजनीति

Chapter :- शक्ति के नए केंद्र

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

- Maths
- Science
- English
- Sst

11th & 12th

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti

सत्ता के वैकल्पिक केंद्र

सोवियत संघ का विघटन

विश्व एक ध्रुवीय

सत्ता का एकमात्र केंद्र

अमेरिका

ऐसी परिस्थिति में

सत्ता के वैकल्पिक केंद्र के रूप में उभार

क्षेत्रीय संगठन

- यूरोपीय संघ - यूरोप महाद्वीप
- आसियान] एशिया
- सार्क
- BRICS — दक्षिण अमेरिका
  एशिया
  अफ्रीका

देश

- भारत
- चीन
- रूस
- जापान
- दक्षिण कोरिया
- इजराईल

यूरोपीय संघ और आसियान की एकसमान नीति या प्रभाव

(a) क्षेत्रीय स्तर पर समाधान

- दोनों ने अपने-अपने क्षेत्रों में चलने वाले ऐतिहासिक दुश्मनीयों और कमजोरियों का क्षेत्रीय स्तर पर समाधान निकालने का प्रयास किया।

(b) शांतीपूर्ण सहकारी क्षेत्रीय व्यवस्था

- दोनों संगठनों ने अपने क्षेत्रों में शांतीपूर्ण और सहकारी क्षेत्रीय व्यवस्था विकसित की है।

(c) संतुलित विकास

- सभी सदस्य देशों की अर्थव्यवस्था को जोड़कर संतुलित विकास का प्रयास दोनों संगठनों द्वारा किया गया है।

by - M H Rabbani

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोपीय देश

(a) मान्यता एवं व्यवस्था ध्वस्त

- 1945 के द्वितीय विश्व युद्ध ने यूरोपीय देशों के आपसी सम्बंधों पर आधारित मान्यताओं एवं व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर दिया ।

(b) मार्शल योजना

- इस युद्ध ने यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर दिया, अत: अमरीका ने इनकी अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए मार्शल योजना चलाया।

(c) एकीकरण

अर्थव्यवस्था के एकीकरण का चरणबद्ध ढंग से प्रयास किया गया।

विद्या दृष्टि
The Vision of Education

यूरोप के पूँजीवादी देशों की अर्थव्यवस्था का एकीकरण

(a) एक दुसरे की मदद

- पश्चिम यूरोप के देशों ने व्यापार और आर्थिक मामलों में एक दूसरे की मदद की।

(b) यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन

- **मार्शल योजना** के अंतर्गत **1948** में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना की गई जिसके माध्यम से पश्चिमी यूरोप के देशों की आर्थिक मदद दी गई।

(c) यूरोपीय परिषद

- राजनीतिक सहयोग के लिए **1949** में यूरोपीय परिषद का गठन हुआ।

(d) यूरोपीय आर्थिक समुदाय

- **1957** में 6 देशों ने **रोम संधि** के माध्यम से यूरोपीय आर्थिक समुदाय (E. E. C) और यूरोपीय एटॉमी उर्जा समुदाय (E.A.E.C) का गठन किया।
- फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, इटली, बेल्जियम, निदरलैंड, लग्जम्बर्ग

(e) यूरोपीय पार्लियामेंट का गठन

- **जून 1979** में यूरोपीय पार्लियामेंट के गठन के बाद यूरोपीय आर्थिक समुदाय ने राजनीतिक स्वरूप लेना शुरू कर दिया।

(f) माट्रिस्ट संधि

- **फरवरी 1992** में मास्ट्रिस्ट संधि के द्वारा यूरोपीय संघ का गठन किया गया।

यूरोपीय संघ

(a) यूरोपीय देशों का एक संगठन ।
(b) स्थापना, 1992 में मास्ट्रिस्ट संधि के माध्यम से ।
(c) प्रारंभ में आर्थिक संगठन लेकिन बाद में राजनीतिक संगठन के तरह कार्य करने लगा।
(d) 2003 में संविधान बनाने का असफल प्रयास
(e) मुख्यालय- ब्रुसेल्स (बेल्जियम)

by - M H Rabbani

(f) सदस्य देश - 27

आस्ट्रिया, बेल्जियम, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस (यूनान), आयरलैंड, इटली, लक्ज़मबर्ग, नीदरलैंड या हॉलैंड, पुर्तगाल, स्पेन, पोलैंड, हंगरी, स्लोवेनिया, स्लोवाकिया, लिथुआनिया, चेक गणराज्य, एस्टोनिया, लताविया, साइप्रस, माल्टा, बुल्गारिया, रोमानिया, क्रोएशिया, स्वीडन,

यूरोपीय संघ का मानचित्र

by - M H Rabbani

प्रमुख संधियाँ एवं तिथियाँ

रोम की संधि	1 जनवरी 1958
एकल यूरोपीय अधिनियम	1 जुलाई 1987
मास्ट्रिच की संधि	1 नवंबर 1993
लिस्बन समझौता	1 दिसंबर 2009
अंतिम राज्य व्यवस्था को स्वीकार किया गया	1 जुलाई 2013
युनाइटेड किंगडम का यूरोपीय संघ से बहिर्गमन	31 जनवरी 2020

यूरोपीय संघ का इतिहास

- साल 1950 में बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, लक्सेम्बर्ग,और निथरलैंड इन 6 देशों ने मिलकर यूरोपीय व्यापर क्षेत्र की अवधारणा की स्थापना की थी।
- साल 1957 में रोम की संधि – इसने 1968 में सीमा शुल्क को हटा दिया था।
- 1979 में इस संघ में डेनमार्क, आयरलैंड, यूनाइटेड किंगडम, को इसमें जोड़ा गया था। और पहली यूरोपीय संघ संसद भी 1979 में ही बनाई गयी थी।
- 1981 में इस संघ में ग्रीस, स्पेन और पुर्तगाल देश भी शामिल हो गये थे।
- साल 1993 में – यूरोप में साँझा आम बाजार की स्थापना की गयी
- साल 1995 में -इस साल में भी कई देश यूरोपीय संघ का हिस्सा बने जैसे की- ऑस्ट्रिया ,स्वीडन ,फ़िनलैंड
- साल 2004 में भी कई से देश इसके सदस्य बने जैसे की -सायप्रस, चेक रिपब्लिक, एस्टोनिया, हंगरी, लातविया, लिथुआनिया, माल्टा, पोलैंड, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया देश भी इसमें जुड़े
- साल 2007 में बुल्गारिया और रोमानिया भी इस संघ का हिस्सा बने
- साल 2009 -में यूरोपीय संसद की शक्तिओं में वृद्धि की गयी इसने यूरोपीय संघ को अंतर्राष्ट्रीय संधियों पर बातचीत करने व हस्ताक्षर करने का अधिकार दिया।

यूरोपीय संघ का झंडा

- सोने के रंग के 12 सितारों का घेरा जो नीले आधार पर बना है।
- यह घेरा यूरोप के लोगो की **एकता और मेल-मिलाप** का प्रतीक है।
- **12 की संख्या** को यूरोप मे परम्परारीक रूप से **पूर्णता, समग्रता और एकता का प्रतीक** माना जाता है।

by - M H Rabbani

यूरोपीय संघ का उद्देश्य

(1) एक समान विदेश एवं सुरक्षा नीति।
(2) बीजा मुक्त अवगमन।
(3) एक समान मुद्रा यूरो का प्रचलन।
(4) यूरोप के विभिन्न देश की अर्थव्यवस्था को जोड़ना।
(5) आंतरिक मामलो तथा एक-दूसरे के न्याय से जुड़े मामलो मे सहयोग।
(6) पर्यावरण में सुधार के लिए जंगल, नदियों व वन्यजीवों की रक्षा करना।

By- M H Rabbani

यूरोपीय संघ की साझी विशेषताएं

- साझी विदेश एवं सुरक्षा नीति
- साझी मुद्रा
- एकीकृत या साझा बाजार
- साझा झंडा, गान और स्थपना दिवस

यूरोपीय संघ का स्वरूप

- इसकी स्थापना एक आर्थिक सहयोग वाली संस्था के रूप में की गई थी परन्तु धीरे - धीरे इसने राजनैतिक स्वरूप धारण कर लिया।
- एक अधि-राष्ट्रीय संगठन (एक ऐसा संगठन जिसमें बहुत से राष्ट्रों की शक्ति और गुण भरे हो) के तौर पर यूरोपीय संघ आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मामलों में दखल देने लगा।
- यूरोपीय संघ एक विशाल राष्ट्र राज्य की तरह कार्य करने लगा है।
- इसने एक झंडा, एक गान, और एक मुद्रा (यूरो) की नीति अपनाइ है।
- विदेशी संबंधों के लिए इसने अपनी साझी विदेश और सुरक्षा नीति बनाई है।
- 🔴 उपरोक्त विशेषताएं यूरोपीय संघ के राजनीतिक स्वरूप को रेखांकित / स्पष्ट करते हैं।

यूरोपीय संघ का प्रभाव

👉 यूरोपीय संघ को ताकतवर बनाने वाले कारक या यूरोपीय संघ की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है :-

(1) आर्थिक कारक / प्रभाव / विशेषता

- 2005 के आंकड़ों के अनुसार विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था।
- 2016 के आकड़ो के अनुसार दूसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था
- 1200 अरब डॉलर की GDP,अमेरिका से भी अधिक।
- मुद्रा यूरो अमेरिकी डॉलर से मजबूत।
- विश्व व्यापार मे अमेरिका से तीन गुना अधिक हिस्सेदारी।
- यह WTO जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनो के भीतर एक महत्वपूर्ण समूह के रूप मे कार्य करता है।
- आर्थिक शक्ति का प्रभाव सिर्फ नजदीकी देशो पर ही नहीं बल्कि एशिया और अफ्रीका के देशों पर भी है।

(2) राजनीतिक कारक / प्रभाव / विशेषता

- दो सदस्य देश ब्रिट्रेन तथा फ्रांस न केवल परमाणु शक्ति सम्पन्न है बल्कि सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य भी हैं।
- इसके कारण यूरोपीय संघ अमेरिका समेत दुनिया के सभी देशो की नीतियों को प्रभावित करता है यह यूरोपीय संघ के कूट नीतिक एवं राजनीतिक प्रभाव को दर्शाता है।
- इसके कुई सारे सदस्य देश सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य है जो इसे अंतर्राष्ट्रीय पटल पर नीति निर्धारण मे प्रभुत्वशाली बनाता है।

(C) सैन्य कारक / प्रभाव / विशेषता

- यूरोपीय संघ के पास दुनिया की दूसरी सबसे बडी सेना है।
- रक्षा बजट अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर।
- दो सदस्य देश ब्रिट्रेन और फ्रांस के पास 550 के करीब परमाणु हथियार है।

(d) कूटनीतिक कारक / प्रभाव / विशेषता

- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकारों का उल्लंघन और पर्यावरण के विनाश के मामले पर धमकी या सैन्य शक्ति के प्रयोग करने की जगह कूटनीतिक, आर्थिक निवेश और बातचीत की इसकी नीति इसे और अधिक प्रभावशाली बनाती है।

निष्कर्ष :-

👉 उपरोक्त विशेषताएँ यूरोपीय संघ को एक विशाल राष्ट्र राज्य के रूप मे अपने सदस्य देशो की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मामलो मे दखल देने में सक्षम बनाता है।

👉 उपरोक्त विशेषताएँ यूरोपीय संघ को एक अधिराष्ट्री संगठन के रूप मे स्थापित करता है।

👉 यह एक बहुत पुराना संगठन है जो इसे स्थायी और प्रभावी बनाता है

👉 यूरोपीय संघ का आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और कूटनीतिक प्रभाव बहुत जबरदस्त है।

यूरोपीय संघ का कमीयाँ / कमजोरियाँ

(a) सदस्य देशो की विदेश नीति एवं रक्षा नीति एक दूसरे के विरुद्ध :-

- यूरोपीय संघ का गठन एक समान विदेश नीति एव रक्षा नीति के आधार पर किया गया था।
- परन्तु इनके सदस्य देशो की विदेश नीति कभी - कभी एक दूसरे के विरुद्ध हो जाती है।
- इसके कारण आपस मे ही सदस्य देशो के बीच टकराव की संभावना बन जाती है।
- जैसे - इराक पर अमेरिकी हमले का ब्रिटेन ने समर्थन किया जबकि जर्मनी और फ्रांस ने विरोध किया।

(b) यूरो मुद्रा को लेकर असंतोष :-

- यूरोप के कुछ हिस्सो मे यूरो मुद्रा को लागू करने को लेकर असंतोष है।
- इसी कारण से ब्रिटेन ने स्वयं को यूरोपीय बाजार से अलग रखा।
- स्वीडन और ड्रेनमार्क ने यूरो मुद्रा को मनाने से इंकार कर दिया है।

(c) एक संविधान बनाने का असफल प्रयास

- यूरोपीय संघ द्वारा 2003 में अपना संविधान बनाने का प्रयास लेकिन उसमे असफल रहे।

(d) यूरोपीय संघ और NATO

- यूरोपीय संघ के कई सदस्य देश अमेरिकी गठनबंधन मे शामिल हैं।
- यूरोपीय संघ में मात्र चार ऐसे देश हैं जो NATO के सदस्य नहीं हैं —
  - **ऑस्ट्रिया**
  - **साइप्रस**
  - **आयरलैंड**
  - **माल्टा**

By- M H Rabbani

(e) मास्ट्रिस्ट संधि का विरोध

- स्वीडन और डेनमार्क जैसे देश मास्ट्रिस्ट संधि का विरोध कर रहे है।

(f) आइसलैंड और नार्वे जैसे यूरोपीय देश ने यूरोपीय संघ से बाहर रहने का विकल्प चुना है।

निष्कर्ष :-

👉 वस्तुत: यूरोपीय संघ की उपरोक्त कमियाँ इसे एक कमजोर क्षेत्रीय संकाठन के रूप में वैश्विक पटल पर स्थापित करता है।

👉 अत: यूरोपीय संघ अंतराष्ट्रीय संगठन के रूप मे राजनैतिक और समाजिक विषयों में हस्तक्षेप करने में सक्षम है परन्तु विदेश और रक्षा के क्षेत्र में इसकी क्षमता सीमित है।

प्रश्न- निम्नलिखित घटनाओं की तिथि क्रमानुसार लिखिए-

(क) यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना ।
(ख) यूरोपीय संघ की स्थापना ।
(ग) यूरोपियन इकॉनामिक कम्युनिटी का गठन।
(घ) शागेन संधि द्वारा यूरोपीय समुदाय के देशों में सीमा नियंत्रण समाप्त करना।
(ङ) एकीकृत बाजार का गठन।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By- M H Rabbani

उत्तर :- (क) यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना (1948)
(ग) यूरोपियन इकॉनामिक कम्युनिटी का गठन (1957)
(घ) शागेन संधि द्वारा यूरोपीय समुदाय के देशों में सीमा नियंत्रण समाप्त करना (1985)
(ख) यूरोपीय की स्थापना (1992)
(ङ) एकीकृत बाजार का गठन (1993)

ASEAN आसियान

👉 **ASEAN**
- Association of south east asian nation
- दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संघ / संगठन

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 **स्थापना**
- 8 अगस्त 1967
- बैंकॉक घोषणा पत्र के माध्यम से स्थापना

👉 **बैंकॉक घोषणा पत्र**
- बैंकॉक घोषणा में यह कहा गया कि दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र को "शांति, स्वतंत्रता और तटस्थता यानी निष्पक्षता का क्षेत्र बनाने का प्रयास किया जाएगा।

👉 **संस्थापक सदस्य**
- 5
- थाइलैंड, मलेशिया, सिंगापुर इंडोनेशिया, फिलिपिंस

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 **बाद में शामिल सदस्य**
- म्यांमार, लाओस, वियतनाम कंबोडिया, ब्रुनेई दारुसलाम

👉 **वर्तमान सदस्य देश - 10**

👉 **मुख्यालय - जकार्ता (इंडोनेसिया)**

👉 सबसे तीव्र दर से विकास करने वाला क्षेत्र (संगठन)

👉 **आसियाना शैली**
- आसियान ने अनौपचारिक, टकरावरहित और सहयोगात्मक मेल-मिलाप के द्वारा कार्य करने की पद्धति को अपनाया, जिसे "आसियान शैली" कहा गया है।
- इसका तात्पर्य है कि अनौपचारिक विचार-विमर्श करके सहमति या सर्वसम्मति से किसी निर्णय तक पहुँचा जाए, न कि बहुमत से लिए गए फैसले दूसरों पर थोप दिए जाएँ।
- इस शैली से आसियान ने काफी यश (प्रसिद्धि) कमायी है।

आसियान के उद्देश्य

(a) आर्थिक विकास

- दक्षिण पूर्व एशिया मे साझा प्रयास से आर्थिक विकास को तेज करना।

(b) सामाजिक और सांस्कृतिक विकास

- आर्थिक विकास के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक विकास हासिल करना।

(c) शांति और सहअस्तित्व

- संयुक्त राष्ट्र के कायदों पर आधारित क्षेत्रीय शांति और सहअस्तित्व को बढावा देना।

(d) अनौपचारिक टकराव रहित सहयोगात्मक मेल-मिलाप

- यूरोपीय संघ की कार्यप्रणाली से अलग अनौपचारिक टकरावरहित सहयोगत्मक मेल-मिलाप से विकास की ओर बढ़ना भी इसके उद्देश्य मे शामिल है

(e) कानून और शासन में सुधार।

(f) समान उद्देश्य वाले अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठनों के साथ बेहतर संबंध बनाना।

आसियान की स्थापना की पृष्ठभूमि / कारण

👉 द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले तथा बाद में दक्षिण पूर्व एशिया का यह भाग जापान तथा यूरोपीय शक्तियों के उपनिवेशीकरण के कारण आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से पिछड़ा रहा।

👉 युद्ध की समाप्ति की बाद इसने राष्ट्र निर्माण आर्थिक पिछड़ेपन और गरीबी जैसे समस्याओं का सामना करने के साथ-साथ शीत युद्ध के दौर मे किसी एक गुट मे शामिल होने का दबाव भी झेला।

👉 गुट की राजनीति में शामिल होने से दक्षिण पूर्व एशिया संघर्ष की शुरूआत हो गई।

👉 बांडूंग सम्मेलन और गुट निरपेक्ष आंदोलन आदि के माध्यम से एशिया और तीसरी दुनिया के देशो मे एकता क़ायम करने के प्रयास अनौपचारिक स्तर पर सहयोग और मेलजोल कराने के मामले में कारगर नहीं हुए।

👉 इसी के चलते दक्षिण पूर्व एशिया के देशो ने 1967 में बैकांक घोषणा पत्र के माध्यम से आसियान की स्थापना की।

आसियान के स्तम्भ

आसिमान के निम्नलिखित तीन स्तंभ इसे प्रभावशाली बनाते हैं :-

(a) आसियान सुरक्षा समुदाय :-

- क्षेत्रीय विवादो को आम सहमति से सुलझाना ताकि सैन्य टकराव की संभावना न बन सके।
- शांति, सहयोग और अहस्तक्षेप को बढावा देना।
- सदस्य राष्ट्रो की समप्रभुता का सम्मान करना।
- आसियान के सदस्य देशों की सुरक्षा और विदेश नीति मे ताल मेल बनाने के लिए 1994 में आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना की गई।

(b) आसियान सामाजिक सांस्कृतिक समुदाय

- आपसी टकराव को खत्म कर बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देना।
- सदस्य देशो के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देना।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

(c) आसियान आर्थिक समुदाय

- दक्षिण पूर्व एशिया के देशो के लिए साझा बाजार और उत्पादन का आधार तैयार करना।
- श्रम, पूंजी और निवेश के मुक्त प्रवाह को बढ़ावा देना।
- आर्थिक एवं सामाजिक विकास को बढ़ावा देना।

By- M H Rabbani

आसियान का झंडा

- **धान की दस बालियाँ** दक्षिण पूर्व एशिया के **दस देशो** को संकेतिक करती है जो आपस मे मित्रता एवं एकता के धागे से बँधे हुए हैं।
- **वृत्त** इन देशों के बीच एकता का **प्रतीक** है।

आसियान की विशेषताएँ

(a) आसियानशैली
(b) आर्थिक विकास
(c) आसियान विजन
(d) मुक्त व्यापार

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

आसियान विजन - 2020 [स्वप्न दृष्टि]

आसियान विजन 2020 में निम्नलिखित प्रस्ताव रखे गयें थें :-

(1) बातचीत से समाधान

- आसियान विभिन्न देशो के बीच टकराव को बातचीत से खत्म करेगा।
- जैसे आसियान ने कंबोडिया के टकराव को समाप्त किया और पूर्वी तीमोर के संकट को संभाला।

(2) मुक्त व्यापारिक क्षेत्र

- आसियान निवेश, श्रम, वस्तु एवं सेवाओ के मामले मे मुक्त व्यापारिक क्षेत्र स्थापित करने का प्रयास करेगा।
- इस प्रस्ताव पर आसियान के साथ बातचीत करने की पहल अमेरिका और चीन ने भी कर दी।

(3) राजनीतिक मंच

- यह एशियाई देशो और वैश्विक शक्तियों को राजनीति एवं सुरक्षा के मामलो पर चर्चा के लिए एक राजनीतिक मंच उपलब्ध कराएगा।

(4) मौजूदा व्यावस्था में सुधार

- यह संगठन इस क्षेत्र के देशो के आर्थिक विवादो को निपटाने के लिए बनी मौजूदा व्यवस्था मे सुधार का प्रयास करेगा।

आर्थिक संगठन के रूप में आसियान

(1) बुनियादी स्वरूप

- बुनियादी रूप से आसियान का गठन एक आर्थिक संगठन के रूप मे हुआ था और इसने अभी तक अपने आर्थिक स्वरुप का बनाए रखा है।

(2) क्षेत्रीय राजनीतिक विवादो मे न पडना

- यह संगठन क्षेत्रीय राजनीतिक विवादो मे नही पड़ा।
- बल्कि मेल-मिलाप और टकराव रहित सहयोगत्मक नीति पर आगे बढ़ता रहा।

(3) तीव्र आर्थिक विकास

- आसियान क्षेत्र की कुल अर्थव्यवस्था अमेरिका जापान और यूरोपीय संघ की तुलना में काफी छोटी है।
- फिर भी इसका विकास इन सबसे अधिक तेजी से हो रहा है जिसके कारण इस क्षेत्र मे और बाहर इसके प्रभाव में वृद्धि हो रही है।

By- M H Rabbani

(4) आसियान आर्थिक समुदाय

- इसने आसियान के आर्थिक स्वरूप को निर्धारित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- आसियान देशो के लिए साझा बाजार एवं उत्पादन का आधार तैयार किया है जिससे इन क्षेत्रों में लगातार आर्थिक विकास हो रहा है।
- निवेश, श्रम एवं सेवाओं के मामले में मुक्त व्यापारिक क्षेत्र बनाने का प्रयास किया है।

(5) मौजूदा व्यवस्था में सुधार

- आसियान अपने क्षेत्र के देशो के आर्थिक विवादो को निपटाने के लिए बनी मौजूदा व्यवस्था में लगातार सुधार करता आ रहा है।

निष्कर्ष :-

👉 वस्तुतः दक्षिण पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्था को जोड़ कर इस क्षेत्र के संतुलित आर्थिक विकास करने के लिए 1967 मे आसियान का गठन हुआ था।

👉 उसके बाद से आसियान ने लगातार अपना ध्यान राजनीतिक विवादों की जगह आर्थिक विकास पर रखा है।

👉 यही कारण है कि आज भी आसियान एक आर्थिक संगठन के रूप को धारण किये हुए है।

आसियान की उपयोगिता / प्रासंगिकता / महत्व

(1) एशियाई देशो को साथ व्यापार एवं निवेश

- वर्तमान आर्थिक शक्ति एवं तेजी से विकास करने वाले देश भारत एवं चीन के साथ व्यापार एवं निवेश ने इसके प्रांसगिता को और बढ़ा दिया है।

(2) संवाद एवं परामर्श की नीति

- आसियान की वास्तविक ताकत अपने सदस्य देशों, सहयोगी सदस्यो और गैर क्षेत्रीय संगठनो के बीच निरंतर परामर्श एवं संवाद की नीति महै जो इसे और अधिक उपयोगी बनाता है।
- इसी नीति का अनुसरण करते हुए आसियान ने कंबोडिया के टकराव को तथा पूर्वी तीमोर के संकट को समाप्त किया।

(3) आसियान-भारत संबंध

- भारत ने दो आसियान देशो सिंगापुर और थाइलैंड के साथ अलग से मुक्त व्यापार समझौता (FTA) किया है।
- भारत आसियान के साथ FTA करने का प्रयास कर रहा है।
- भारत से संबंधो के कारण आसियान की उपयोगिता को समझा जा सकता है।

(4) राजनीतिक मंच उपलब्ध कराना

- यह एशिया का एक मात्र ऐसा संगठन है जो एशियाई देशों और वैश्विक शक्तियों को राजनीति एवं सुरक्षा के मामलो पर चर्चा के लिए मंच उपलब्ध कराने का प्रयास करता है।

(5) विजन 2020

- आसिमान की प्रांसगिता एवं उपयोगिता विजन 2020 (स्वप्न दृष्टि 2020) के प्रास्ताव मे भी झलकता है।

आसियान क्षेत्रीय मंच

👉 आसियान क्षेत्रीय मंच की **स्थापना 1994 में** की गई।

👉 **प्रमुख उद्देश्य :--**

(1) सदस्य देशो की सुरक्षा एवं विदेश नीति मे ताल - मेल बनाना।
(2) आर्थिक विकास को तेज करना और उसके माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक विकास प्राप्त करना।
(3) कानून के शासन और सयुक्त राष्ट्र के नियमो पर आधारित क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व को बढावा देना।
(4) अनौपचारिक, टकराव रहित और सहयोगत्मक मेल-मिलाप को बढ़ावा देना जिसे आसियान शैली कहते है।
(5) राष्ट्रीय सार्वभौमिकता को बढ़ावा देना।

By- M H Rabbani

आसियान की विशेषता

(1) आसियान सुरक्षा समुदाय
(2) आसियान आर्थिक समुदाय
(3) आसियान सामाजिक सांस्कृतिक समुदाय
(4) संवाद एवं परामर्श की नीति

आसियान की सफलता

(1) आसियान शैली
(2) आसियान के स्तंभो के कार्य
(3) आसियान की प्रासंगिता

आसियान के प्रति भारत की नीति
भारत - आसियान संबंध

(1) प्रारम्भ में महत्व नहीं

- सन् 1967 में इस संगठन के अस्तित्व मे आने के बाद भारत की विदेश नीति मे आसियान को कोई महत्व नही दिया गया और भारत दक्षिण पूर्व एशिया के साथ पूर्वी एशिया की भी उपेक्षा करता रहा।

(2) 1991 के बाद

- सन् 1991 में भारत ने "पूर्व की ओर देखो"(Look east) की नीति अपनाई।
- इससे पूर्वी एशिया मे चीन, जापान,दक्षिण कोरिया,जैसे देशो के साथ व्यापार बढाने मे सफलता प्राप्त हुई।
- आसियान के साथ भी व्यापारिक संबंधो मे सुधार हुआ है।
- सिंगापुर और थाइलैंड के साथ FTA।

(3) वर्तमान संबंध

- Look East की जगह Act East की नीति।
- 1992 मे भारत आसियान का क्षेत्रीय भागीदार (Reginal partner) बना।
- 1996 मे भारत आसियान का संवाद भागीदार (Dialogue partner) बना।
- 2002 में आसियान भारत शिखर सम्मेलन की शुरुआत हुई।

आसियान के सशक्तिकरण के लिए सुझाव

👉 अंतर्राष्ट्रीय समुदाय मे आसियान के सशक्तिकरण के लिए निम्न कदम उठाए जाने चाहिए :-

(1) यूरोपीय संघ की तरह इसका अपना झंडा, गान स्थापना दिवस और मुद्रा होनी चाहिए।
(2) सदस्य देशो के बीच अपसी व्यापार को बढ़ावा देना चाहिए।
(3) सुरक्षा और विदेश नीति मे ताल-मेल स्थापित करना चाहिए।
(4) यूरोपीय संघ की तरह UNO की गतिविधियो मे अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए।

भारत - आसियान शिखर सम्मेलन

(1) 16 वाँ,2019, बैकांक (थाइलैंड)
(2) 17 वाँ, 2020, हनोई (वियतनाम)
(3) 18 वाँ,2021, ब्रुनेई (Bander)
(4) 19 वाँ,2022, नोम पेन्ह (कंबोडिया)

आसियान + 3

- चीन
- जापान
- दक्षिण कोरिया

By- M H Rabbani

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- आसियान के स्तंभ का निर्माण :- 2015
- आसियान विजन 2020 :- 1997
- भारत आसियान मैत्री वर्ष :- 2022
- आसिमान दिवस :- 8 अगस्त
- आसियान का चार्टर लागू हुआ :- 2008
- आसियान का आदर्श वाक्य :-

"One vision, One Idendity, One Community"

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By- M H Rabbani

क्षेत्रीय संगठन बनाने के मुख्य उद्देश्य

(a) सदस्य देशो के बीच एकता की भावना कायम करना |
(b) विवादो का आपसी बातचीत से निपटारा करना।
(c) क्षेत्रीय सहयोग को बढावा देना।
(d) क्षेत्र में शांति और सौहार्दय को बढ़ावा देना।
(e) सदस्य देशों के बीच आपसी व्यापर को बढ़ावा देना।
(f) अपने-अपने क्षेत्रों में ऐतिहासिक दुश्मनियों और कमजोरियों का क्षेत्रीय स्तर पर समाधान ढूँढ़ना।
(g) अपने-अपने क्षेत्रों में शांतिपूर्ण और सहकारी क्षेत्रीय व्यवस्था का विकास करना ।
(h) क्षेत्र के देशों की अर्थव्यवस्थाओं का समूह बनाना।

भौगोलिक निकटता का क्षेत्रीय संगठनों के गठन पर असर

- भौगोलिक निकटता देशो मे संगठन की भावना विकसित करती है ।
- चूँकि इनकी भौगोलिक परिस्थितियाँ एवं सुरक्षा समस्याएँ समान होती है, इसलिए संगठन की भावना का विकास होने से पारस्परिक संघर्ष एवं युद्ध की संभावना कम हो जाती है तथा सहयोग एवं शांति की भावना का विकास होता है।
- आपसी झगड़ो मे होने वाला सैन्य व्यय बच जाता है जिसका प्रयोग आर्थिक विकास के लिए किया जा सकता है।
- सैन्य प्यय कम होने जनकल्याण पर अधिक खर्च किया जा सकता है।

आसियान सम्मेलन

- 34 वाँ और 35 वाँ — 2019, बैकांक (थाईलैंड)
- 36 वाँ और 37 वाँ — 2020, हनोई (वियतनाम)
- 38 वाँ और 39 वाँ — 2021, Bander Seri Begawan (ब्रनेई)
- 40 वाँ और 41 वाँ — 2022, कंबोडिया
- 42 वाँ और 43 वाँ — 2023, इंडोनेशिया

ब्रिक्स BRICS

- दुनिया की पाँच प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओ का एक समूह।
- 2001 मे ब्रिटिश अर्थशास्त्री जिम ओ नील ने BRIC शब्द को गढ़ा।
- निर्माण / स्थापना 2006 मे न्यूयार्क मे ब्रिक के रूप में हुआ।
- **मुख्यालय — शंघाई (चीन) में**
- सदस्य देश —

(1) brazil - Jair Balsonaro
(2) Russia - Vladimir Putin
(3) India - Narendra Damodar Dash Modi
(4) China - Xi Jinping
(5) South Africa - cyril Ramaphosa

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

प्रथम सम्मेलन

- 16 June 2009 → Yekatenbung (Russia)
- इस समय दक्षिण अफ्रीका सदस्य नहीं था।
- भारत की ओर से डॉ मनमोहन सिंह शामिल हुए |
- दक्षिण अफ्रीका ने 2010 मे BRIC को JOIN किया और 2011 के सम्मेलन मे शामिल हुआ।

ब्रिक्स सम्मेलन

Russia	2009
Brazil	2010
China	2011
India	2012
South Africa	2013
Brazil	2014
Russia	2015
India	2016
China	2017
South Africa	2918
Brazil	2019
Russia	2020
India	2021
China (Beizing)- virtual	2022
South Africa	August 2023 में होना तय है

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

G - 7

[अंतर-सरकारी राजनीतिक मंच]

- Canada
- France
- Germany
- Italy
- Japan
- United Kingdon
- USA

- G-6 — 1975
- G-7 — 1976, Canada
- G-8 — 1977, Russia
- G-7 — 2014 में रूस बाहर

BRICS की विशेषताएं

- विश्व का एक चौथाई क्षेत्रफल।
- दुनिया की लगभग 41% आबादी।
- 2023 के वर्तमान आंकड़ों के अनुसार विश्व GDP का लगभग 31%।
- अनुमान लगाया जा रहा था कि 2030 तक यह GDP योगदान के मामले में G-7 से आगे निकल जाएगा परन्तु यह काम इसने 2023 में ही कर दिया (G-7 GDP लगभग 30%)।
- अब अनुमान लगाया जा रहा है कि 2030 तक विश्व GDP में ब्रिक्स का योगदान लगभग 50% हो जाएगा।
- दुनिया के कुल व्यापार में 16% हिस्सेदारी।
- दो सदस्य देश रूस और चीन के पास वीटो पावर।
- इसकी पहल पर "नव विकास बैंक" (NDB) का निर्माण।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By- M H Rabbani

ब्रिक्स का इतिहास

- ब्रिक्स की शुरुआत /चर्चा वर्ष 2001 में Goldman Sachs के अर्थशास्त्री 'जिम ओ नील' द्वारा ब्राज़ील, रूस, भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं के लिये विकास की संभावनाओं पर एक रिपोर्ट में की गई थी।
- वर्ष 2006 में चार देशों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की सामान्य बहस के अंत में विदेश मन्त्रियों की वार्षिक बैठकों के साथ एक नियमित औपचारिक राजनयिक समन्वय शुरू किया।
- इस सफल बातचीत से यह निर्णय हुआ कि इसे वार्षिक शिखर सम्मेलन के रूप में देश और सरकार के प्रमुखों के स्तर पर आयोजित किया जाना चाहिए।
- इसप्रकार ब्रिक का निर्माण हुआ जो दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने से ब्रिक्स बन गया।

ब्रिक्स की संरचना

- ब्रिक्स कोई अन्तर्राष्ट्रीय अन्तर-सरकारी संगठन नहीं है, न ही किसी संधि के तहत स्थापित हुआ है।
- इसे पाँच देशों का एकीकृत प्लेटफॉर्म कहा जा सकता है।
- ब्रिक्स देशों के सर्वोच्च नेताओं का तथा अन्य मन्त्रि-स्तरीय सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते हैं।
- ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता प्रतिवर्ष B-R-I-C-S क्रमानुसार सदस्य देशों के सर्वोच्च नेता द्वारा की जाती है।

NOTE :-

अंतर-सरकारी संगठन (Inter-governmental Organization-IGO) शब्द संधि द्वारा बनाई गई एक इकाई के लिए प्रयोग किया जाता है , जिसमें दो या दो से अधिक राष्ट्र शामिल होते हैं जो सामान्य हितों के मुद्दों पर आपसी विश्वास के साथ काम करते हैं।

ब्रिक्स के उद्देश्य

(1) प्रत्येक राष्ट्र की आंतरिक नीतियो मे अहस्ताक्षेप।
(2) परस्पर सदस्य देशो के बीच समानता का भाव।
(3) सदस्य देशो के मध्य सहयोग को बढ़ावा देना।
(4) परस्पारिक आर्थिका लाभ का वितरणा करना।
(5) अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं मे सुधार।

By- M H Rabbani

ब्रिक्स और विवाद

- सदस्य देशो के बीच कुछ मुद्दो पर मद-भेद।
- भारत और चीन के बीच विवाद।

(a)सीमा विवाद
(b) OBOR को लेकर विवाद
(c) पाकिस्तान से संबंधों को लेकर विवाद
(d) चीन और ब्राजील मे चीन की मुद्रा से संबंधित समस्या।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

ब्रिक्स के समक्ष चुनौतियाँ

- रूस चीन और भारत के अपने - अपने हित ब्रिक्स के लिए चुनौती है।
- वैश्विक स्तर पर एक समान समप्रभुत्ता ब्रिक्स का आधारभूत सिद्धांत है लेकिन अक्सर सदस्य देशों पर स्वयं के राष्ट्र हित प्रभावी हो जाते हैं।
- विभिन्न देशो के बीच आपसी मद-भेद भी चुनौती का रूप ले लेते है।

By- M H Rabbani

ब्रिक्स से संबंधित सुझाव

- व्यापक आर्थिक सहयोग को बढावा देना चाहिए।
- सामाजिक और सांस्कृतिक सहयोग को भी बढ़ावा देना चाहिए ।
- राजनीतिक विवादों से परे व्यवहारिक मुद्दो पर ध्यान देना चाहिए।

ब्रिक्स की पहल

(1) New Development Bank
(2) आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था
(3) ब्रिक्स भुगतान प्रणाली
(4) सीमा शुल्क समझौता

न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB)

- NDB - New development bank
- भारत के सुझाव पर 2014 मे बनाया गया।
- वर्ष **2014 में ब्राजील के फोर्टालेजा में छठे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान** BRICS नेताओं ने न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) की स्थापना के लिये समझौते और हस्ताक्षर किये।
- फोर्टालेजा घोषणा में कहा गया कि NDB ब्रिक्स देशों के बीच सहयोग को मजबूत करेगा और वैश्विक विकास के लिये बहुपक्षीय तथा क्षेत्रीय वित्तीय संस्थानों के प्रयासों को पूरा करके स्थायी और संतुलित विकास में योगदान देगा।
- **मुख्य कार्य :-** तकनीकी सहायता और ऋण प्रदान करना
- **मुख्यालय - शंघाई (चीन)**
- NDB के संचालन के प्रमुख क्षेत्र

(1) स्वच्छ ऊर्जा
(2) आधारभूत संरचना, परिवहन, सिंचाई
(3) शहरी विकास और सदस्य देशों के आर्थिक सहयोग।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

भारत के लिए ब्रिक्स का महत्व

(1) भारत आर्थिक मुद्दों पर परामर्श और सहयोग के साथ-साथ सामयिक वैश्विक मुद्दों, जैसे अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में सुधार आदि के माध्यम से ब्रिक्स की सामूहिक ताकत से लाभान्वित हो सकता है।
(2) NDB भारत को बुनियादी ढाँचे और सतत विकास परियोजनाओं के लिये संसाधन जुटाने तथा लाभ अर्जित करने में मदद करेगा।
(3) NDB ने अपने पहले ऋण को स्वीकृति दी है, जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा फाइनेंसिंग स्कीम के तहत भारत के लिये मल्टीट्रेन्च फाइनेंसिंग सुविधा हेतु 250 मिलियन डॉलर का ऋण शामिल है।
(4) स्टैंडर्ड एंड पूअर्स, मूडीज जैसी पश्चिमी एजेंसियों के विरोध में प्रस्तावित ब्रिक्स क्रेडिट रेटिंग एजेंसी (BCRA) की स्थापना होने से भारतीय अर्थव्यवस्था की अंतराष्ट्रीय स्तर पर छवि में और सुधार होगा।

आकस्मिक रिज़र्व व्यवस्था

वर्ष 2014 में **छठे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में** फ़ोर्टालेजा घोषणा के दौरान ब्रिक्स आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था (CRA)
बनाने पर सहमति जताई गई।

(क) CRA का उद्देश्य भुगतान संतुलन संकट की स्थिति को कम करने और **वित्तीय स्थिरता को मजबूत** करने में मदद के लिये मुद्रा विनिमय के माध्यम से सदस्यों को **अल्पकालिक मौद्रिक सहायता** प्रदान करना है।
(ख) CRA की **प्रारंभिक क्षमता 100 बिलियन डॉलर** है।
(ग) यह वैश्विक वित्तीय सुरक्षा नेट को मजबूत करने और मौजूदा वित्तीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं को मजबूत करने में योगदान देगा।

By- M H Rabbani

ब्रिक्स - सहयोग के क्षेत्र

(1) आर्थिक सहयोग :

(क) ब्रिक्स देशों में कई क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग की गतिविधियों के साथ-साथ व्यापार और निवेश तेजी से बढ़ रहा है।

(ख) ब्रिक्स समझौतों से आर्थिक और व्यापारिक सहयोग नवाचार सहयोग, सीमा शुल्क सहयोग, ब्रिक्स व्यापार परिषद्, आकस्मिक रिजर्व समझौते और न्यू डेवलपमेंट बैंक के बीच रणनीतिक सहयोग आदि सामने आए हैं।

(ग) ये समझौते आर्थिक सहयोग को मजबूत करने और एकीकृत व्यापार तथा निवेश बाजारों को बढ़ावा देने के साझा उद्देश्यों की प्राप्ति में प्रोत्साहन देते हैं।

(2) पीपल-टू-पीपल एक्सचेंज :

(क) ब्रिक्स सदस्यों ने पीपल-टू-पीपल एक्सचेंज को मजबूत करने और संस्कृति, खेल, शिक्षा, फिल्म आदि क्षेत्रों तथा युवाओं में निकट सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता को पहचाना है।

(ख) पीपल-टू-पोपल एक्सचेंज द्वारा ब्रिक्स सदस्यों के बीच खुलापन, समावेशिता, विविधता और सीखने की भावना आदि मामलों में संबंधों के मजबूत होने की अपेक्षा की जाती है।

(ग) पीपल-टू-पीपल एक्सचेंज में यंग डिप्लोमेट्स फोरम, पार्लियामेंट्री फोरम, ट्रेड यूनियन फोरम, सिविल ब्रिक्स के साथ-साथ मीडिया फोरम भी शामिल है।

(3) राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग

(क) ब्रिक्स सदस्यों के राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग का उद्देश्य विश्व को शांति, सुरक्षा विकास और अधिक न्यायसंगत एवं निष्पक्ष बनाने में सहयोग करना है।

(ख) ब्रिक्स सदस्य देशों की घरेलू और क्षेत्रीय चुनौतियों के लिये साझा नीतिगत सलाह तथा सर्वोत्तम कार्यों के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करता है।

(ग) यह वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था के पुनर्गठन पर बल देता है ताकि यह बहुपक्षवाद पर आधारित हो एवं अधिक संतुलित हो।

(घ) दक्षिण अफ्रीका की विदेश नीति की प्राथमिकताओं के लिये ब्रिक्स एक माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है जिसमें अफ्रीकी एजेंडा और दक्षिण सहयोग शामिल हैं।

(4) सहयोग तंत्र :

सदस्यों के बीच निम्नलिखित माध्यमों से सहयोग किया जाता है :

ट्रैक 1 : राष्ट्रीय सरकारों के बीच औपचारिक राजनयिक जुड़ाव ।

ट्रैक 2 : सरकार से संबद्ध संस्थानों के माध्यम से संबंध, उदाहरण के लिये राज्य के स्वामित्व वाले उद्यम और व्यापार परिषद् ।

ट्रैक 3 : सिविल सोसायटी और पीपल-टू-पीपल कॉन्टेक्ट ।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

वैश्विक संस्थागत सुधारों पर ब्रिक्स का प्रभाव

(क) BRICS देशों के बीच सहयोग शुरू करने का मुख्य कारण वर्ष 2008 का वित्तीय संकट था। इस वित्तीय संकट के कारण डॉलर के प्रभुत्व वाली मौद्रिक प्रणाली की स्थिरता पर संदेह उत्पन्न हुआ था।
(ख) BRICS ने बहुपक्षीय संस्थानों के सुधार के क्रम में वैश्विक अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन और तेजी से उभरते हुए बाजार (जो केंद्रीय भूमिका निभाते हैं) को दर्शाया है।
(ग) BRICS ने संस्थागत सुधारों पर जोर दिया जिसके कारण वर्ष 2010 में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के कोटे में सुधार हुआ।
(घ) इसने वित्तीय संकटों में पश्चिमी प्रभुत्व को कम कर दिया और BRICS देशों को बहुपक्षीय संस्थानों में 'एजेंडा सेंटर' बनने दिया।

1950 के दशक में चीन

- **माओ** के नेतृत्व नेतृत्व में **1949 में चीनी क्रांति** हुई जिसके बाद वहाँ **साम्यवादी सरकार** की स्थापना हुई।
- यह आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ देश था।
- सरकारी नियंत्रण कठोर था।
- उत्पादन के साधनो पर सरकारी नियंत्रण।
- **USSR,** चीन की आर्थिक एवं वित्तीय **सहायता** करता था ल
- कृषि क्षेत्र से पूँजी निकल कर सरकारी नियंत्रण में भारी उद्योग शुरू किए गए।
- विदेशी बाजारों से ऊँची तकनीक और साजो समान खरीदने के लिए चीन के पास विदेशी मुद्रा की बहुत कमी थी।
- अतः घरेलू स्तर पर तकनीको को विकसित कर उत्पादन की नीति अपनाई गई।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

चीन की अर्थव्यवस्था का उत्थान

👉 1970 के बाद चीन ने अपनी नीतियो मे परिवर्तन किया और सामाजवादी अर्थव्यवस्था की जगह मिश्रित अर्थव्यवस्था माडल को अपनाना शुरू किया।
👉चीन की अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित हैं :-

(a) अमेरिका से संबंध

- **1972** में चीन ने राजनीतिक तथा आर्थिक एकांतवास की नीति को समाप्त कर अमेरिका से संबंध स्थापित किए जिससे विदेश व्यापार के लिए रास्ता खुला।

(b.) आधुनिकरण की नीति

- **1973** मे चीन के प्रधानमंत्री **चाऊ एन लाई** ने चरणबद्ध तरीके से आधुनीकरण का प्रस्ताव दिया।
- 'कृषि, उद्योग, सेना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आधुनिकीकरण।

(c) **आर्थिक सुधार एवं खुले द्वार की नीति**

- **देंग शियाओ पिंग** चीन का राजनेता एवं सुधारक थे जो माओ जेदाँग की मृत्यु के बाद चीन को बाजारवादी अर्थव्यस्वथा की तरफ ले गये।
- **1978** मे ने मुक्त द्वार या खुले द्वार की नीति शुरू की।
- इससे चीन मे विदेशी पूँजी निवेश का मार्ग खुला, परिणामत: उत्पादन क्षमता मे वृद्धि हुई और चीन तेजी से विकास करने लगा।
- चीन ने शॉक थेरेपी को नही अपनाया बल्कि अपनी अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोला।

(d) निजीकरण

- **1982 मे कृषि** का निजीकरण।
- **1998 मे उद्योग** का निजीकरण।
- इससे कृषि उत्पाद तथा ग्रमीण आम मे वृद्धि हुई।

By - M H Rabbani

(e) विशेष आर्थिक क्षेत्र

- SEZ - Special Economic Zone
- विशेष आर्थिक क्षेत्र का निर्माण कर विदेशियो को चीन मे पूँजी लगाने के विशेष सुविधाएँ दी गई।
- व्यापार और अवरोधको को समाप्त किया गया जिससे व्यापार मे वृद्धि हुई।

(f) विशाल आबादी एवं भूभाग

- इसकी विशाल आबादी बड़ा भूभाग, संसाधन की क्षेत्रीय अवस्थिति और राजनीतिक प्रभाव ने चीनी अर्थव्यवस्था के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(g) WTO की सदस्यता

- 2001 में विश्व व्यापार संगठन में शामिल होकर चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था को दुनिया की अन्य अर्थव्यवस्थाओं से जोड़ कर स्वयं को आर्थिक रूप से और मजबूत कर लिया है।
- WTO की वाध्यताओं के अनुसार व्यापार अवरोधको में कमी से वैश्विक व्यापार मे वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष :-

👉 वर्तमान मे चीन जिस दर से आर्थिक विकास कर रहा है, 2040 तक यह दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन जाऐगा।

👉 चीन पूर्वी एशिया के विकास का इंजन है जो वर्तमान विश्व में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के लिए सबसे आकर्षक केन्द्र बनकर उभरा है।

चीन की आर्थिक नीति की समीक्षा

👉 **सकारात्मक प्रभाव या पक्ष मे तर्क**

- 1978 मे तत्कालीन नेता देंगे श्योगपिंग ने चीन में आर्थिक सुधार की शुरुआत की जिसके कारण पूर्णत: चीन के आर्थिक एकांतवास की समाप्ति हो गई।
- खुले द्वार की नीति से विदेशी निवेश में वृद्धि हुई।
- कृषि, उद्योग, सेना, तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे आधुनिकरण हुआ।
- विभिन्न प्रकार के व्यापार अवरोधको को हटानें से व्यापार तथा उद्योग मे वृद्धि हुई।
- अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोलने से चीन की GDP मे तीव्र वृद्धि हुई।

👉 **नकारात्मक प्रभाव या विपक्ष मे तर्क**

- आर्थिक सुधारो का लाभ समाज के सभी वर्गों को नहीं मिला।
- आर्थिक समृद्धि में वृद्धि के साथ- साथ बेरोजगारी भी बढ़ी ।
- अंधाधुन्ध उद्योग, विकास के कारण पर्यावरण को क्षति हुई।
- गाँव एव शहर के तटीय क्षेत्रो मे रहने वाले लोगो के बीच आर्थिक विषमता बढ़ी।
- महिलाओं के लिए रोजगार एवं काम के हालातह बदत्तर होते है गए।
- भष्ट्राचार मे भी वृद्धि हुई।

निष्कर्ष :-

👉 चीन की आर्थिक नीतियो से आर्थिक वृद्धि तो हुई लेकिन उसका लाभ सबको एक समान रूप से नहीं मिला।

👉 एक तरफ GDP में तीव्र वृद्धि हुई तो दुसरी तरफ आर्थिक विषमता और बेरोजगारी भी बढ़ी।

चीन कीविशेषताएँ

- विशाल जनसंख्या
- बड़ा भूभाग
- संसाधन
- क्षेत्रीय अवस्थिति
- राजनीतिक प्रभाव

By - M H Rabbani

प्रश्न . आज की चीनी अर्थव्यवस्था नियंत्रित अर्थव्यवस्था से किस तरह से अलग है ?

उत्तर-

● नियंत्रित अर्थव्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं :-

(i) नियंत्रित अर्थव्यवस्था में बड़े उद्योगों पर सरकारी नियंत्रण था। उत्पादन और वितरण सरकार को नीतियों के अनुसार होता था।

(ii) चीन ने विदेशी मुद्रा के अभाव के कारण आयात किए जाने वाले सामानों का निर्माण देश में करवाना शुरू कर दिया।

(iii) इस नियंत्रित अर्थव्यवस्था के परिणामस्वरूप औद्योगिक अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।

(iv) अर्थव्यवस्था का विकास 5 से 6 प्रतिशत वार्षिक दर से हुआ परंतु औद्योगिक उत्पादन पर्याप्त तेजी से नहीं बढ़ा।

(v) विदेशी व्यापार न के बराबर था और प्रतिव्यक्ति आय बहुत कम थी।

● इसके विपरीत वर्तमान चीनी अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित विशेषताएं हैं :-

(i) 1978 से खुले द्वार की नीति अपनाई गई ताकि विदेशी पूँजी और प्रौद्योगिकी के निवेश से उच्चतर उत्पादकता को प्राप्त किया जाए।

(ii) अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध तरीके से खोला गया।

- 1982 में खेती का निजीकरण किया गया।
- 1988 में उद्योगों का निजीकरण किया गया।
- व्यापार संबंधी अवरोधों को केवल 'विशेष आर्थिक क्षेत्रों' के लिए ही हटाया गया ताकि विदेशी निवेशक अपने उद्यम लगा सके। इस प्रकार वर्तमान चीनी अर्थव्यवस्था में चोन ने अपने आर्थिक एकांतवास को छोड़कर न केवल विदेशी निवेशकों को निमंत्रण दिया बल्कि बाजारमूलक अर्थव्यवस्था को भी अपने ढंग से अपनाया है।

प्रश्न . 1978 से पूर्व और बाद में चीन द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीतियों में दो अंतरों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- 1978 से पूर्व और बाद में चीन द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीतियों में दो अन्तर निम्नलिखित हैं-

(i) 1978 से पूर्व चीन की आर्थिकी सोवियत मॉडल पर आधारित थी अर्थात् यह राज्य द्वारा नियंत्रित थी, परंतु 1978 के पश्चात् चीन ने आर्थिक सुधारों के लिए 'खुले द्वार की नीति अपनाई।

(ii) 1978 से पूर्व चीन ने आयातित सामानों को धीरे-धीरे घरेलू स्तर पर बनवाना शुरू कर दिया। सभी नागरिकों को रोजगार और सामाजिक कल्याण की योजनाओं का लाभ देने के दायरे में लाया गया परंतु 1978 के पश्चात् विशेष आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण करके विदेशी व्यापार में वृद्धि की गई। चीन विदेशी निवेश के लिए एक आकर्षक देश बन गया।

भारत - चीन संबंध

- 1949 मे साम्यवादी क्रांति के बाद चीनी रिपब्लिक गणराज्य की स्थापना हुई।
- 1950 मे चीनी के साथ भारत ने राजनयिक संबंध स्थापित किए। चीनी रिपब्लिक गणराज्य को मान्यता देना वाला भारत प्रथम गैर सम्यवादी देश था।

संबंधों में तनाव के बिंदु

(1) तिब्बत मुद्दा एवं दलाईलामा को शरण देना

- 1950 मे चीन द्वारा तिब्बत को हरपने तथा भारत चीन सीमा पर बस्तियां बसाने के फैसले से दोनों देशो के बीच तनाव पूर्ण संबंधो की शुरुआत हुई।
- भारत द्वारा दलाईलामा को शरण देना तनाव मे वृद्धि का कारण बना।

(2) विभिन्न क्षेत्रो पर दावे को लेकर तनाव

- भारत और चीन अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सो और लद्दाख के अक्साई चीन क्षेत्र पर अपना दावा करते हैं।
- इसकी वजह से भारत चीन के बीच युद्ध हुआ।

By - M H Rabbani

(3) 1962भारत चीन युद्ध

- 1962 के युद्ध मे भारत को सैन्य पराजय झेलनी पेड़ी जिसका दीघकालीक प्रभाव भारत चीन संबंध पर पड़ा।
- 1976 तक दोनो देशों के बीच कूटनीतिक संबंध या राजनीतिक संबंध समाप्त रहे।

(4) पाकिस्तान के साथ चीन के बेहतर संबंध

- पाकिस्तान के साथ चीन के बेहतर रिश्ते एवं चीन के द्वारा सुरक्षा परिषद मे भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध किया जाना भारत चीन संबंधो के बीच तनाव का एक प्रमुख कारण रहा है।

सौहार्दय / संबंधों में सुधार / बदलते संबंध

(1) व्यवहारिक मुद्दो पर ध्यान

- 1970 के उत्तरार्ध मे चीन के राजनीतिक नेतृत्व में बदलाव आया जिसके बाद वैचारिक मुद्दो की जगह व्यवहारिक मुद्दों पर बल दिया गया और विवादस्पद मुद्दे समाप्त होते चले गयें।

(2) वार्ताओं का दौर

- 1976 मे दोनो देशो के बीच पुन राजनीतिक संबंध बहाल हुए।
- 1979 मे तत्कालीन विदेश मंत्री वाजपेयी जी चीन दौरे पर गए।
- 1988 में PM राजीवगांधी ने चीन का दौरा किया जिसमे सीमा विवाद पर यथास्थिति बनाए रखने की पहल की गई।
- राजीवगांधी के इस दौरे मे दोनो देशो ने विज्ञान एवं तकनीक , सांस्कृतिक आदान - प्रदान एवं परस्पर सहयोग तथा व्यपारिक विस्तार के लिए सीमा पर चौर पोस्ट खोलने के लिए समझौते किए।

(3) सहयोगात्मक दृष्टिकोण

- दोनों देश वर्तमान मे ऐसे मामलो पर सहयोग करने के लिए राजी है, जिनसे भविष्य मे विवाद हो सकता है जैसे विदेशो मे ऊर्जा सौदा हासिल करने का मामला।

(4) एक समान नीतियाँ

- WTO जैसे अन्य आर्थिक संगठनो के मामलो में दोनों देशो की नीतियाँ एक जैसी है।

(5) परिवहन एवं संचार

- परिवहन एवं संचार साधनो मे वृद्धि से सकारात्मक एवं अच्छे संबंधो को निर्माण मे सहायता मिल रही है।

(6) द्वीपक्षीय व्यापार

- द्वीपक्षीय व्यापार 'मे लगभग तीस प्रतिशत से अधिक की दर से वृद्धि ।
- वर्तमान मे लगभग भारत और चीन के बीच का व्यापार 100 अरब डॉलर को पर कर चूका है।

(7) राजनेता

- दोनो देशों के राजनेताओ और अधिकारियो के परस्पर दौरे होते रहें जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशो के संबंध में सुधार और मजबूती आई है।

🔴 **निष्कर्ष :-**

👉 वस्तुत: शीत युद्ध के समाप्ति के बाद भारत चीन संबंधों में महत्वपूर्ण बदलाव आया है अब इनके संबंध केवल राजनीतिक नहीं बल्कि आर्थिक भी हैं।

भारत - चीन वर्तमान संबंध

- 2003 मे भारत के प्रधानमंत्री की चीन यात्रा के दौरान कई समूह समझौते हुए।.

(a) विजा नियमो को उदार बनाने के लिए(b) शिक्षा, संस्कृति और व्यापार मे सहयोग के लिए।

- 2005 मे चीन ने सिक्कम को भारत का हिस्सा मान लिया।
- 2006 भारत और चीन BRIC के सदस्य बने।
- 2014 से 18 के बीच भारत के प्रधानमंत्री की पाँच बार चीन यात्रा तथा चीनी राष्ट्रपति की भारत यात्रा हुई। 2017 में डोकलाम [भुट्टान में सड़क निर्माण पर दोनों देशों के बीच तनाव]
- 2020 में गलवान घाटी, लद्दाख मुद्दे को लेकर दोनों के बीच तनाव।

भारत की वर्तमान स्थिति

👉 21 वी सदी के भारत को एक उदीयमान वैश्विक शक्ति के रूप में देखा जा रहा है।
👉 एक बहुआयामी दृष्टिकोण से विश्व भारत की शक्ति तथा उसके उदय को अनुभाव कर रहा है।
👉 लगभग 135 करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश की आर्थिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति बहुत सुदृढ़ है।

उदियमान वैश्विक शक्ति के रूप में भारत

(1) आर्थिक परिप्रेक्ष्य में :-

- पाँच ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अमेरिकी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य।
- एक विशाल प्रतिस्पर्धी व्यापार केन्द्र के रूप मे भारत का उभार हो रहा है।
- विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मे" मेक इन इंडिया " योजना" भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बना सकती है।

(2) सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य मे

- दुनिया मे 200 मिलियन(2 करोड) भारतीय प्रवासियो के साथ भारत की प्राचीन समावेशी सांस्कृति भारत को 21 वी सदी में शक्ति के एक नये केंद्र के रूप में एक विशिष्ट अर्थ तथा महत्व प्रदान करती है।

(3) समारिक परिप्रेक्ष्य

- सामरिक दृष्टिकोण से भारत की सैन्य शक्ति परमाणु तकनीक के साथ इसे आत्मनिर्भर बनाती है।

🔴 **निष्कर्ष :-** वस्तुतः यह सभी परिवर्तन भारत को वर्तमान विश्व मे शक्ति का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाते हैं।

सत्ता के वैकल्पिक केंद्र के रूप में भारत और चीन

(1) दोनो उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ

- वर्तमान समय मे भारत और चीनो दोनों विश्व की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हैं।
- इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारत एवं चीन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका को चुनौती देने की स्थिति मे है।

(2) सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य के रूप चीन

- चीन UNO सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य है जिसके पास परमाणु एवं सैन्य शक्ति भी है।
- साथ ही साथ चीन अपने आर्थिक विकास के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को विश्वस्तरीय बना रहा है।

(3) भारत भविष्य का महाशक्ति

- कुछ समीक्षक भारत को आने वाले समय मे एक महाशक्ति मे रूप देख रहे हैं।

(4) विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र भारत

- भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है।
- भारत ने पिछले कुछ वर्षो में संचार, तकनीक विज्ञान एवं सूचना के क्षेत्र मे अन्य देशों तुलना मे बहुत उन्नती की है।

(4) परमाणु शक्ति सपन्न भारत

- भारत के पास एक शक्तिशाली सेना है तथा भारत एक परमाणु शक्ति संपन्न जिम्मेदार देश है।
- अमेरिका ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की भूमिका को देखते हुए भारत के साथ असैन्य परमाणु संधि की है।

🔴 **निष्कर्ष :-**

वस्तुतः भविष्य में भारत एवं चीन एक ध्रुवीय विश्व को चुनौती देने में सक्षम हो सकते हैं। इसप्रकार ये दोनों ही देश सत्ता के वैकल्पिक केंद्र के रूप में अंतराष्ट्रीय पटल पर उभर रहे हैं।

By - M H Rabbani

जापान

- जापान, एशिया महाद्वीप के पूर्व में तथा प्रशांत महासागर के पश्चिम में स्थित एक द्वीपीय देश है।
- जापान के पड़ोसी देश रूस, चीन तथा दक्षिण कोरिया हैं।
- जापान की **राजधानी 'टोक्यो'** है। जापान की **मुद्रा 'जापानी येन'** है।
- जापान एक **लोकतांत्रिक (संसदीय प्रणाली) संवैधानिक राजतंत्र** व्यवस्था वाला देश है।
- जापानी संविधान के अनुसार जापान की स्वायत्तता की बागडोर जापान की जनता के हाथों में है।
- जापान को अपनी मजबूत सशक्त सेना है।जापान का संविधान **(अनुच्छेद-9)** जापानी सेना को दूसरे देशों पर सैनिक अभियान/आक्रमण करने की इजाजत नहीं देता है।
- जापान 1964 में आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन (ऑर्गनाइज़ेशन फार इकॉनॉमिक कोऑपरेशन एण्ड डेवलपमेंट **OECD**) का सदस्य बन गया।
- आबादी के लिहाज से विश्व में 11वाँ स्थान।
- परमाणु बम की विभीषिका झेलने वाला एकमात्र देश।

सत्ता के वैकल्पिक केंद्र के रूप में जापान की संभावना

- आज जापान एक विकसित राष्ट्र है। इसकी मजबूत अर्थव्यवस्था है। जापान का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) 4975 ट्रिलियन डॉलर है।
- यह विश्व की **तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** वाला देश है।
- एशिया के देशों में अकेला जापान ही समूह-7 (G-7) के देशों में है।
- UNO के बजट में अंशदान (10%) करने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश।
- 1951 से जापान का अमेरिका के साथ सुरक्षा-गठबंधन है।
- जापान चतुर्भुज सुरक्षा संवाद **(क्वाड)** का सदस्य भी है।
- जापान दुनिया में उच्च प्रोधोगिकी के लिए सबसे ज़्यादा मशहूर है।
- जापान में ऑटोमोबाइल उद्योग (विश्व में दूसरा स्थान) उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स तथा कम्प्यूटर उद्योग सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी विश्व प्रसिद्ध है।
- **सोनी, पैनासोनिक, कैनन, सुजुकी, होंडा ट्योटा और माज्दा** जैसे प्रसिद्ध जापानी ब्रांड हैं, इन ब्रांड की उत्पादन इकाई भारत में भी स्थापित की गई है। जापान भारत के बीच मधुर सम्बंध हैं।
- विवादों के प्रयोग के लिए बल प्रयोग या धमकी के जगह कूटनीति का सहारा लेना, इसे और प्रभावशाली बनाता है।
- GDP का मात्र 1% सेना पर खर्च, फिर भी दुनिया में सातवीं बड़ी सेना।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By - M H Rabbani

दक्षिण कोरिया

- दक्षिण कोरिया एशिया महाद्वीप का एक विकसित देश है।
- दक्षिण कोरिया के पड़ोसी देश चीन, जापान तथा उत्तरी कोरिया हैं।
- दक्षिण कोरिया की राजधानी 'सियोल' है। 'सियोल' विश्व का सबसे बड़ा महानगरीय क्षेत्र है।
- कोरियाई प्रायद्वीप को द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में दक्षिण कोरिया (रिपब्लिक ऑफ कोरिया) और उत्तरी कोरिया (डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया) में 38वें समानांतर रेखा के साथ-साथ विभाजित किया गया था।
- 1950-1953 के दौरान कोरियाई युद्ध और शीतयुद्ध काल की गतिशीलता ने दोनों पक्षों के बीच प्रतिद्वंद्विता को तेज कर दिया।
- अंततः 17 सितम्बर, 1991 को दोनों कोरिया संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य बन गए।

विद्या दृष्टि
By - M H Rabbani

सत्ता के वैकल्पिक केंद्र के रूप में दक्षिण कोरिया की संभावना

- दक्षिण कोरिया एशिया में 'शक्ति के केंद्र' के रूप में उभरा रहा है।
- 1960 के दशक से 1980 दशक के बीच इसका आर्थिक शक्ति के रूप में तेजी से विकास हुआ जिसे 'हान नदी पर चमत्कार' कहा जाता है।
- दक्षिण कोरिया 1996 में OECD का सदस्य बना।
- 2017 में इसकी अर्थव्यवस्था दुनिया में ग्यारहवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई ।
- सैन्य खर्च में इसका दुनिया में दसवाँ स्थान है।
- मानव विकास सूचकांक में बेहतर ल इसके उच्च मानव विकास के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारकों में "सफल भूमि सुधार, ग्रामीण विकास, व्यापक मानव संसाधन विकास, तीव्र न्याय संगत आर्थिक वृद्धि " शामिल है।
- दक्षिण कोरिया के सैमसंग, एल.जी. और हुंडई जैसे ब्रांड भारत में बहुत प्रसिद्ध हैं।
- भारत और दक्षिण कोरिया के बीच मधुर सम्बंध है। दोनों देशों के बीच बहुत सारे वाणिज्यिक और सांस्कृतिक समझौते हुए हैं।

रूस

- "रूस" विघटन से पहले "सोवियत संघ" का सबसे बड़ा हिस्सा रहा है।
- रूस 1980 के दशक के अंत और 1990 की शुरुआत में सोवियत संघ के विघटन के बाद, उसके (USSR) उत्तराधिकारी के रूप में मजबूत हुआ।

सत्ता के वैकल्पिक केंद्र के रूप में रूस की संभावना

- GDP के हिसाब से रूस विश्व में 11वें स्थान पर है।
- रूस के पास खनिजों, प्राकृतिक संसाधनों और गैस का अपार भंडार है।
- परिष्कृत हथियारों के विशाल भंडार एवं परमाणु शक्ति इसके सैन्य शक्ति में और वृद्धि करती है।
- रूस संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद का एक स्थाई सदस्य भी है जो इसकी राजनीतिक शक्ति को और बढ़ा देता है।

सत्ता के वैकल्पिक केंद्र के रूप में इजराइल

- विश्व के मानचित्र पर एक बिंदु के समान परंतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी, रक्षा तथा गुप्तचर (माफिया) मामलो में 21वी शताब्दी के विश्व मे एक शक्तिशाल राष्ट्र के रूप मे उदय।
- इजाराइल अपनी अदमयक्षमता, रक्षा कौशल, तकनीकी नवाचार औद्योगिकीकरण तथा कृषि विकास के कारण वैश्विक राजनीतिक क्षेत्र मे नई ऊँचाइयो पर पहुँच गया है ।
- प्रतिकुलता के विरुद्ध निरंतूंरता" के सिद्धांत के माध्यम से एक छोटा यहूदी सियोनवादी राष्ट्र, सामान्य रूप से समकालीन वैश्विक राजनीति मे तथा विशिष्ट रूप से अरब-प्रभुत्तवशील पश्चिम एशियाई राजनीति में एक विशिष्ट भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

भारत - इजराइल संबंध

(क) 17 सितंबर, 1950 को भारत ने इजराइल को आधिकारिक तौर पर मान्यता प्रदान की।
(ख) 1992 में इजराइल के साथ भारत के राजनयिक संबंध स्थापित हुए, प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव ने इजराइल के साथ कूटनीतिक संबंध शुरू करने को मंजूरी दी।
(ग) भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में इजराइल के साथ संबंधों को नए आयाम तक पहुँचाने की पुरजोर कोशिश की गई।इजराइली राष्ट्रपति एरियल शेरोन ने भारत की यात्रा की। किसी इजराइली राष्ट्रपति की यह पहली भारत यात्रा थी।

By - M H Rabbani

(घ) 2015 में पहली बार भारतीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी का इजराइल दौरा ।
(ङ) जुलाई 2017 में पहली बार भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इजराइल यात्रा।
(च) भारत व इजराइल के बीच 7 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए हैं।
(छ) भारत और इजराइल में आतंकवाद के बढ़ने के साथ ही दोनों देशों के संबंध भी मजबूत हुए हैं। अब तक भारत ने इजराइल के साथ 8 सैनिक उपग्रहों को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के माध्यम से प्रक्षेपित किया है।

BREXIT

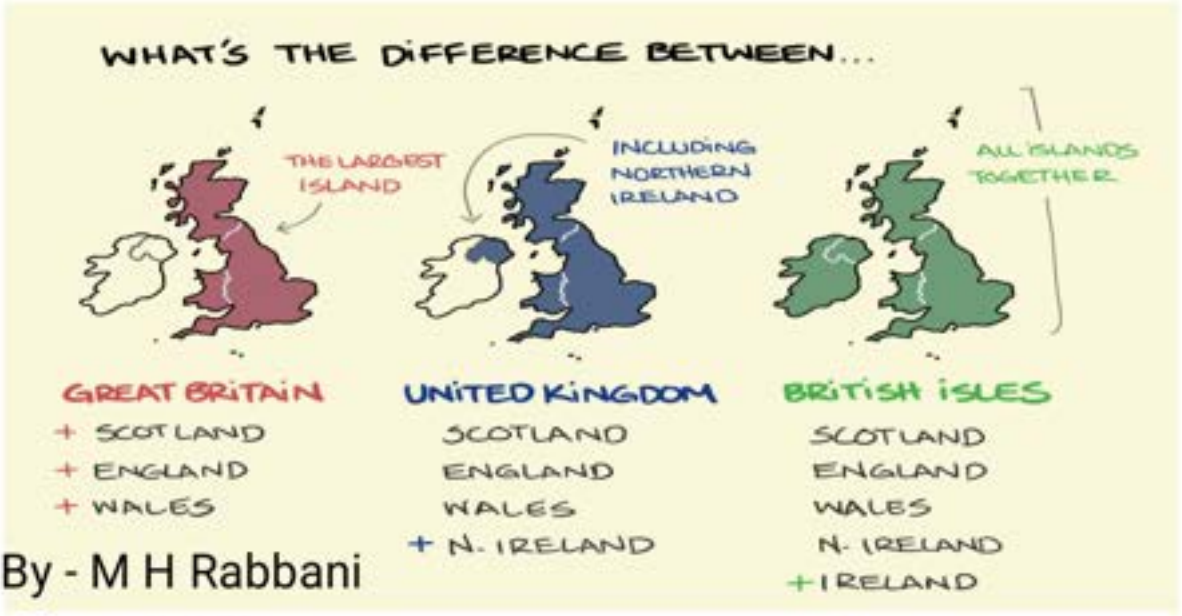

United Kingdom

- Scotland
- England
- Northern Ireland (1922)
- Wales

समान

- सरकार
- संसद

भिन्न

- झंडा
- Cricket Team

स्कॉटलैंड में जनमत संग्रह

- 2014 में जनमत संग्रह
- 55% लोगों ने UK में बने रहने के पक्ष में

UK में जनमत संग्रह

- 2016 में UK में जनमत संग्रह,52% लोगों ने यूरोपीय संघ से अलग होने के पक्ष में मतदान दिया।
- कारण - प्रवासी मुद्दा
- 31 jan 2020 पूर्णतः BREXIT सम्पन्न

UK में जनमत संग्रह का प्रभाव

- आयात महँगा - Tarrif के कारण
- UK कम्पनीयों को यूरोपीय बाजार में पहुँच को लेकर नुकसान।
- श्रम के प्रवाह की समस्या।
- Gdp में गिरावट, निवेश में गिरावट, बेरोजगारी में वृद्धि।
- Scotland में विरोध

कुछ तथ्य

- चीन की आर्थिक शक्ति का प्रतीक - शंघाई
- ARF - Asian regional forum
- 2017 में विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था - जापान
- भारत और आसियान के बीच मुक्त व्यापार समझौता - 2009
- पश्चिम एशियाई राजनीति में विशिष्ट भूमिका कौन सा देश निभाता है - इजराइल
- जापानी संविधान के अनुसार विदेशों पर आक्रमण का निषेध - अनुच्छेद -5
- हान नदी का चमत्कार - दक्षिण कोरिया का तीव्र विकास
- मार्शल योजना -1948
- 1962 भारत चीन युद्ध में सोवियत संघ की भूमिका - तटस्थ
- NEFA (North east frontier agency)- अरुणाचल प्रदेश
- भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा - LOC
- भारत और चीन के बीच सीमा - LAC
- FTA - Free trade agreement
- आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना - 1994

By - M H Rabbani

यूरोपीय एकता के महत्वपूर्ण पड़ाव

👉 **अप्रैल 1951:-**
- पेरिस संधि
- यूरोपीय कोयला और इस्पात समुद्राय
- फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, इटली वेल्जियम नीदरलैंड,लक्जमबर्ग

👉 **मार्च 1957 :-**
- रोम संधि
- उपरोक्त छः सदस्य के बीच
- यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC)
- यूरोपीय एटमी ऊर्जा समुदाय

👉 **जनवरी 1973 :-**
- डेनमार्क,आयरलैंड, ब्रिटेन, यूरोपीम, समुदाय की सदस्यता

👉 **जून 1979 :-**
- यूरोपीय संसद के लिए पहला प्रत्यक्ष चुनाव

👉 **जनवरी 1981 :-**
- यूनान (ग्रीस) ने यूरोपीय समुदाय की सदस्यता ली

👉 **जून 1985 :-**
- शागेन संधि,यूरोपीय देशो के बीच सीमा नियंत्रण समाप्त

👉 **अक्टूबर 1990 :-**
- जर्मनी का एकीकरण

👉 **फरवरी 1992 :-**
- माट्रिस्ट संधि के माध्यम से यूरोपीय संघ का गठन

👉 **जनवरी 1993 :-**
- एकीकृत बजार का गठन

👉 **जनवरी 2002 :-**
- यूरो को 12 सदस्य देशो ने अपनाया

👉 **मई 2004 :-**
- साइप्रस, चैक गणराज्य, एस्टोनिया,हंगरी लताविया, लिथुआनिया, पोलैंड स्लोवाकिया और स्लोवेनिया यूरोपीय संघ मे शामिल

👉 **जनवरी 2007 :-**
- बुल्गारिया और रोमानिया यूरोपीय संघ मे शामिल

👉 **दिसम्बर 2009 :-**
- लिस्वन संधि लागू हुई

👉 **2012 :-**
- यूरोपीय संघ को नोबेल शांति पुरषस्कार

👉 **2013 :-**
- क्रोएशिया यूरोपीय संघ का 28 वाँ सदस्य बना।

👉 **2016 :-**
- ब्रिटेन में जनमत संग्रह

👉 **31 दिसंबर 2020 :-**
- ब्रिटेन यूरोपीय संघ से बाहर

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By - M H Rabbani

चित्र / कार्टून / मानचित्र

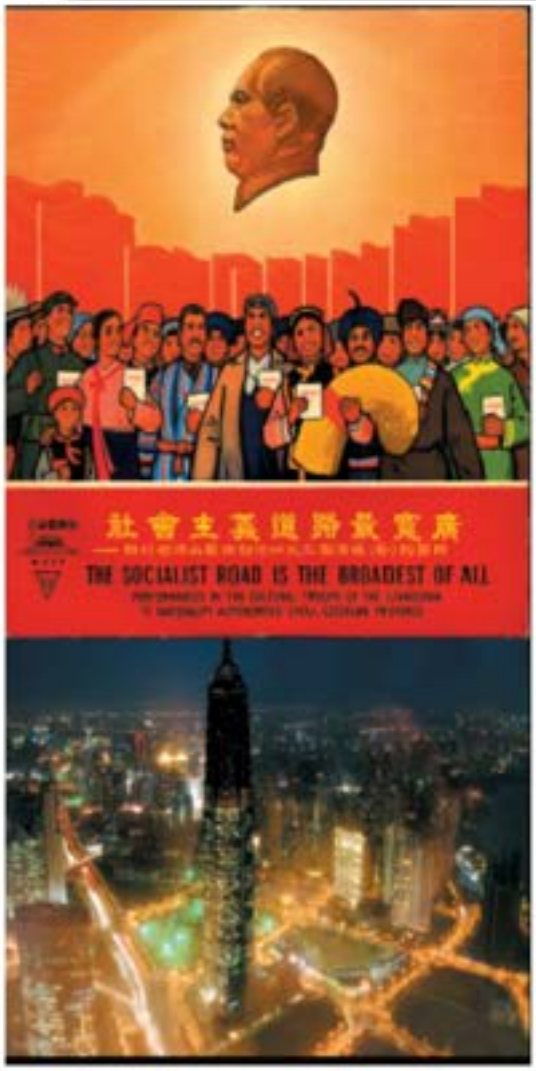

👉 **चित्र -1**

- यह चित्र चीन में क्रांति के बाद का है।
- इसमें कहा गया है कि समाजवादी रास्ता ही सबसे व्यापक है।

👉 **चित्र -2**

- शंघाई का है जो चीन की नयी आर्थिक शक्ति का प्रतीक है।

👉 **एक नयी आर्थिक शक्ति के रूप में चीन**

- चित्र-2 से चीन की नई आर्थिक शक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।
- दिसंबर 1978 में देंग श्याओपेंग ने 'खुले द्वार की नीति' चलायी। इसके परिणामस्वरूप चीन ने अद्भुत उन्नति की और आज यह एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में जाना जाता है।
- शंघाई का चित्र चीन में विकास को तेजी से बदलती प्रवृत्ति का उदाहरण है। आज अपने अन्य विवादों को भुलाकर जापान, अमरीका,आसियान और रूस चीन से संबंध बना रहे हैं। आशा है कि शीघ्र ही चीन और ताइवान के मतभेद भी समाप्त हो जाएँगे।
- लातिनी अमरीकी देशों और अफ्रीका में चोन निवेश कर रहा है और एक नई विश्व शक्ति के रूप में उभर रहा है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By - M H Rabbani

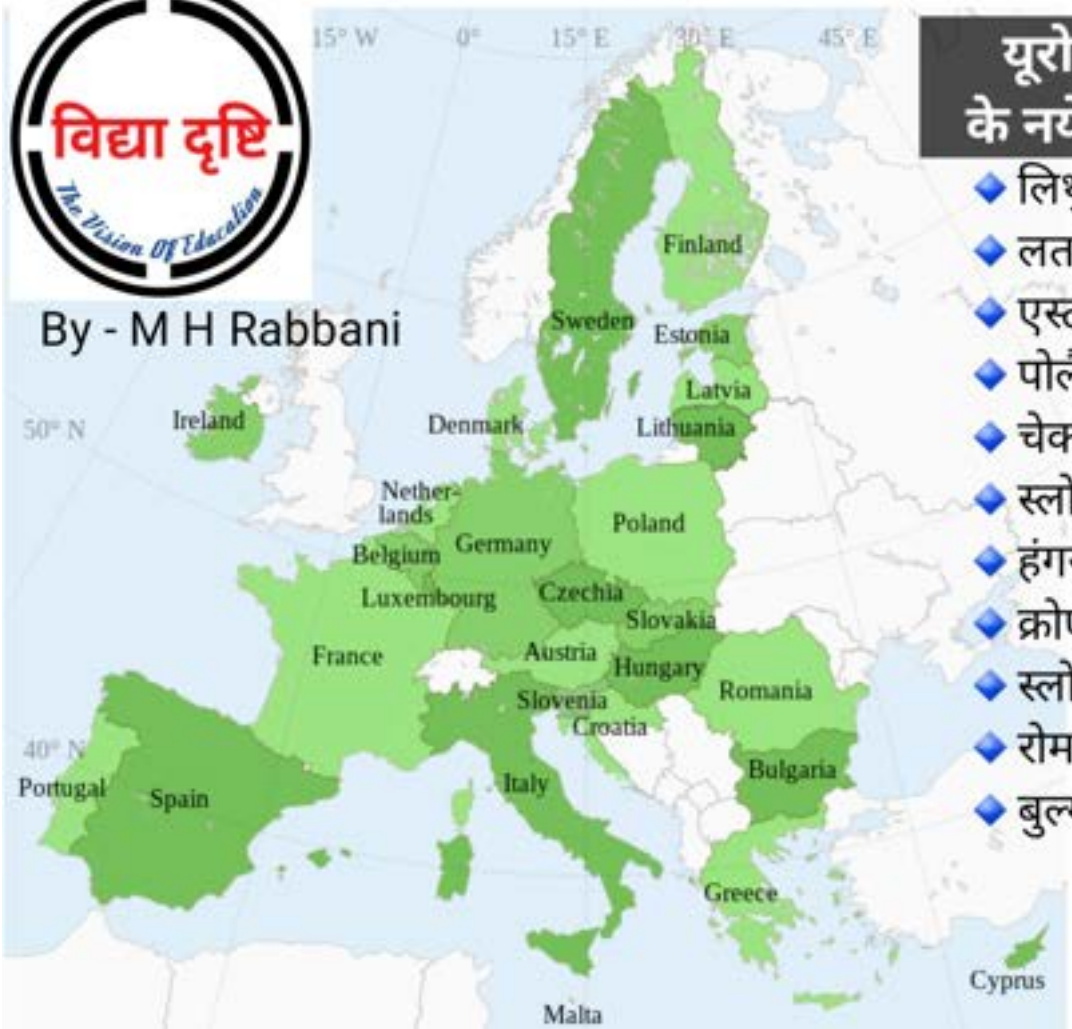

यूरोपीय संघ के नये सदस्य

- लिथुआनिया
- लताविया
- एस्टोनिया
- पोलैंड
- चेक रिपब्लिक
- स्लोवाकिया
- हंगरी
- क्रोएशिया
- स्लोवेनिया
- रोमानिया
- बुल्गारिया

- कार्टूनिस्ट द्वारा यूरोपीय संघ को टाइटैनिक जहाज के रूप दर्शाने का उद्देश्य यह है कि यूरोपीय संघ स्वयं काफी सीमा तक एक विशाल राष्ट्र-राज्य की तरह काम करने लगा है।
- इसका अपना झंडा, गान, स्थापना दिवस और अपनी मुद्रा है। इन देशों की काफी हद तक साझी विदेश नीति और सुरक्षा नीति भी है। परन्तु सदस्य देशों के मतभेद उसे डुबो भी सकते हैं।
- 2003 में यूरोपिया संघ संविधान बनाने की कोशिश नाकाम रही।

East asia & Pacific region

- उत्तर कोरिया
- दक्षिण कोरिया
- जापान
- फिलिपिन्स
- पूर्वी तिमोर
- मंगोलिया
- चीन
- मयंमार
- थाईलैंड
- लाओस
- वियतनाम
- कॉम्बोडिया
- मलेशिया
- ब्रुनई दारूस्लाम
- सिंगापुर
- इंडोनेशिया
- फिलिपनस
- पलाउ
- माइक्रोनेशिया
- मार्शल द्वीप
- किरीबाती
- नारु
- टुवालू

विद्या दृष्टि
The Vision of Education

By - M H Rabbani

- पूर्वी तिमोर
- पापुआ न्यू गिनी
- सोलामन द्वीपसमूह
- कुक द्वीप समूह
- फिजी
- समोआ
- टोंगा
- नियू

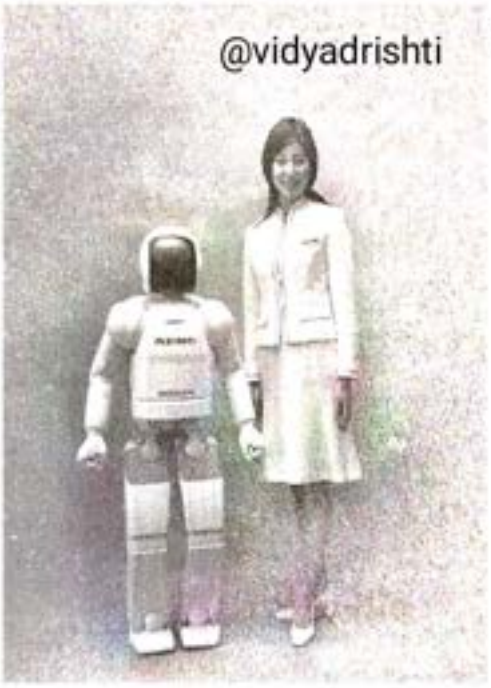

असीमो — विश्व का सबसे अत्याधुनिक मानव रूपी रोबोट जापान द्वारा निर्मित

वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में जापान कितना प्रभावशाली?

इसमें संदेह नहीं कि जापान की अर्थव्यवस्था विश्व में दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है और कई क्षेत्रों में उसका योगदान महत्त्वपूर्ण है परंतु जापान वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में प्रभावकारी नहीं हो सकता, जिसके निम्नलिखित कारण हैं-

(i) जापान के पास प्राकृतिक संसाधन कम हैं और कच्चे माल के लिए वह आयात पर निर्भर करता है।

(ii) संविधान के अनुसार जापान ने युद्ध और बल प्रयोग का त्याग किया हुआ है। अतः युद्ध या किसी अन्य देश के द्वारा उसके विरुद्ध शक्ति का प्रयोग करने की स्थिति में जापान की हालत खराब हो सकती है।

(iii) तीव्र उन्नति के परिणामस्वरूप चीन की स्थिति आने वाले वर्षों में जापान से बेहतर हो सकती है।

इस प्रकार जापान वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में प्रभावकारी नहीं हो सकता।

- भारत ने 1991 से लुक ईस्ट (Look East) और 2014 से एक्ट ईस्ट (Act East) नीति अपनायी।
- इससे पूर्वी एशिया के देशों (आसियान, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया) से उसके आर्थिक संबंधों में बढ़ोत्तरी हुई है।
- चित्र में तत्कालीन वितमंत्री डॉ मनमोहन सिंघ को दिखाया गया है।

चीन : तब और अब

- माओ के नेतृत्व में चीनी क्रांति के बाद चीन ने सोवियत मॉडल को अपनाया।
- माओ के हाथ में लाला किताब समाजवाद या साम्यवाद का प्रतीक है।
- हू जिनताओं के गले में लाल टाई पूंजीवाद का प्रतीक है।
- 1978 में चीन ने खुले द्वारा की नीति शरू की।
- अतः यह कार्टून समाजवाद से पूँजीवाद की ओर चीन की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को दिखता है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By - M H Rabbani

@vidyadrishti

- साइकिल को प्रतीक रूप में इसलिए प्रयोग किया गया क्योंकि सम्पूर्ण विश्व में चीन ही एक ऐसा स्थान है जहाँ सबसे ज्यादा साइकिलें प्रयोग होती है।
- इस कार्टून में साइकिल के दो पहियों के माध्यम से चीन के दोहरेपन को दर्शाया गया है।
- साइकिल का प्रथम पहिया साम्यवाद की निशानी हथौड़ा और दराती को दर्शा रहा है। वहीं दूसरा पहिया पूँजीवाद की निशानी डॉलर को दर्शा रहा है।
- चित्र यह संदेश दे रहा है कि वर्तमान साम्यवादी चीन में आर्थिक परिवर्तन हुआ है। चीन एक साम्यवादी देश है, परंतु साथ ही वह पूँजीवाद को भी मानता है। अर्थात आज के चीन के दोहरेपन चरित्र का संदेश दिया गया है।

- चीन ने पहले विकास के समाजवादी मॉडल को अपना रखा था और पूंजीवादी दुनिया से अपने रिश्ते तोड़ लिए थे। थोड़े समय तक इसे सोवियत मदद भी मिली। इस दौरान चीन में अर्थव्यवस्था का विकास 5 से 6 फीसदी के दर से हुआ, लेकिन जैसे-जैसे सोवियत संघ की शक्ति में कमी आनी शुरू हुई चीन ने अपनी नीतियों में बदलाव लाना और अमेरिका के साथ संबंध बनाना शरू कर दिया।

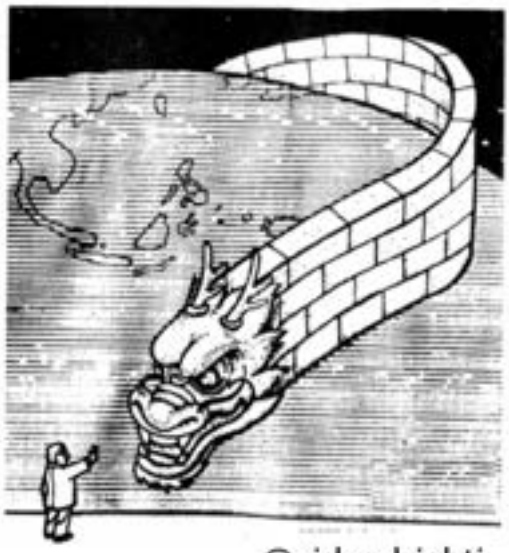
@vidyadrishti

- यह कार्टून चीन देश से संबंधित है।
- ड्रैगन तथा चीन की दीवार दो प्रतीक चीन की पहचान करने में सहायक।
- यह कार्टून चीन के आर्थिक अभ्युदय की कहानी बता रहा है जिसने उसे एक बड़ी शक्ति बनाया। ऐसा अनुमान है कि 2040 तक अमेरिका को पछाड़ कर विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।
- चित्र में व्यक्ति चीन के किसी भी प्रतिद्वंन्दी देश का प्रमुख हो सकता है जो भविष्य में चीन के प्रभुत्व को रोकने का प्रयास कर रहा है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By - M H Rabbani

@vidyadrishti